डॉ. ज्योति भूषण
अतिथि सहायक प्राध्यापक
हिन्दी विभाग
एस. आर. ए. पी. कॉलेज,
बारा चकिया।

'पंच परमेश्वर' की समीक्षा

बहुत सरल-सीधी, परम्परागत वर्णन-शैली की यह कहानी प्रेमचंद के शुरुआती दौर की कहानियों में सर्वाधिक लोकप्रिय और प्रसिद्ध है। लोक में परम्परा से चले आ रहे इस विश्वास का, कि पंच की आत्मा में ईश्वर या खुदा का वास होता है, पंच का आसन साधारण आसन नहीं है, उस पर बैठते ही आदमी का मन निश्छल-निष्पक्ष, देवता का मन हो जाता है, यह कहानी भाष्य प्रतीत होती है। यह कहानी आदमी के सोए हुए जमीर को जगाने वाली कहानी है। सुबह के भूले को शाम तक घर वापस आने की प्रेरणा देने वाली, उसे वापस घर लाने वाली कहानी है यह। जरूर यह जीवन का एक आदर्श है, एक सद्विचार है, जिसे प्रेमचंद ने इस कहानी में रेखांकित किया है।

दो विशिष्ट घटना-प्रसंगों से जुड़े दो साधारण पात्रों, दो मित्रों की कहानी है - 'पंच परमेश्वर'।

मित्र हैं अलगू चौधरी और जुम्मन शेख। खानदानी मैत्री तो उनमें है ही, साझे में खेती-बाड़ी भी होती है। जुम्मन की खाला अपना सब कुछ जुम्मन के नाम करके उनकी आश्रिता की तरह उनके साथ रहती है, 'बूढ़ी काकी' की तरह। जुम्मन की पत्नी खाला के साथ दुर्व्यवहार करती है तथा जुम्मन उसकी

अनदेखी करते हैं। रखाला अंततः जुम्मन के खिलाफ पंचायत बैठाती है। घर-घर जा कर लोगों से फरियाद करती है। जुम्मन के अपने दबदबे के चलते अधिकांश लोग पंचायत में नहीं आते। वही आते हैं जो जुम्मन के प्रति मन में गाँठ रखते थे। रखाला अलगू चौधरी के पास भी जाती है, परंतु अलगू साफ शब्दों में कहते हैं कि उसके नाते वे जुम्मन से बिगाड़ नहीं करेंगे। हताश रखाला अलगू से इतना ही कहती है कि "बिगाड़ के खातिर क्या ईमान की बात नहीं कहोगे?" रखाली का यह वाक्य अलगू के हृदय में चुभ जाता है। वह उसकी चेतना पर बार-बार दस्तक देता है।

पंचायत बैठती है। रखाला अलगू को पंच चुनती है। जुम्मन मन-ही-मन प्रसन्न होते हैं कि अलगू का फैसला उनके पक्ष में होगा। दोनों ओर की दलीलें सुनने के बाद जुम्मन के खिलाफ फैसला देते हैं। न्याय और धर्म की जीत होती है। अलगू की वाह-वाह होती है। जुम्मन चकित रह जाते हैं। उनकी और अलगू की पुरानी मैत्री लगभग टूट जाती है।

संयोगवश एक अन्य संदर्भ में समझू साहु के खिलाफ अलगू को पंचायत बुलानी पड़ती है, जो अलगू से खरीदे बैल का दाम चुकाने से इंकार कर रहा था। इस बार पंच

श्रेष्ठ को चुना जाता है। जुम्मन शेख भी अलगू से प्रतिशोध लेने की सोच रहे थे। उन्हें प्रतिशोध का अवसर मिल जाता है। वे पंच के आसन पर बैठते हैं। दोनों तरफ की दलीलें सुनने के बाद वे फैसला अलगू के पक्ष में देते हैं। पंच की जयकार होती है। अलगू की विस्मित परंतु अभिभूत था। वे जुम्मन के गले लग जाते हैं। पुश्तैनी मैत्री फिर बहाल हो जाती है। जुम्मन स्वीकार करते हैं कि उनके मन में कलुष था, परंतु पंच के आसन पर बैठते ही वह धुल गया। सचमुच पंच में परमेश्वर का, खुदा का वास होता है। इस तरह एक नैतिक आदर्श की प्रतिष्ठा इस कहानी में है, जो आदर्श जरूर है, किन्तु अप्राप्य नहीं। अपने दैनंदिन जीवन व्यवहार में हम सोते जागते, सुबह के भूलों को शाम को घर वापस लौटते देखते हैं। यह आरोपित आदर्श नहीं है; हमारे साधारण जीवन-व्यवहारों में देखी गई सच्चाई है। ग्रामीण जीवन और परिवेश से लोक-मन से प्रेमचंद के गहन परिचय का साक्ष्य भी कहानी में है।